सिटी एंकर किसानों को मिलेगा बेहतर मूल्य और खेजड़ी का संरक्षण भी होगा

राजस्थान की सांगरी को मिला जीआई टैग

बीकानेर भुजिया के बाद सांगरी

बीकानेर | राजस्थान की मशहूर फली सांगरी को अब वैश्विक मान्यता मिल गई है। इसे जीआई टैग मिल गया है। इससे अंतरराष्ट्रीय बाजार में इसकी कीमत में दो से तीन गुना हो जाएगी। दुनिया में पहचान भी बनेगी। पश्चिमी राजस्थान के बीकानेर, बाड़मेर और जैसलमेर में ही इसकी पैदावार ज्यादा होती है।

अब तक राजस्थान के 16 उत्पादों को जीआई टैग मिल चुका है। 17वें उत्पाद एसकेआरएयू ने सांगरी को जीआई टैग दिलाने में महती भूमिका निभाई। जीआई टैग मिलने के बाद इसके उत्पादों का निर्यात मूल्य वर्तमान 1500 से 3000 रुपये प्रति किलोग्राम मिलने की उम्मीद है। जीआई टैग का लेबल लगने से उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण सांगरी मिलेगी। खेजड़ी का संरक्षण होगा। जैव प्रौद्योगिकी विभाग के प्रमुख डॉ. सुजीत कुमार यादव के नेतृत्व में विश्वविद्यालय की टीम के प्रयासों की ओर किए गए प्रयासों से ये सफलता मिली। यादव ने लगभग 700 पेज का व्यापक दस्तावेज तैयार किया।

डॉ. सुजीत यादव के अनुसार भारत में लगभग 600 जीआई-टैग वाली वस्तुएं हैं। जिनमें से लगभग 200 कृषि क्षेत्र में हैं। राजस्थान में "सोजत मेहंदी" जीआई टैग वाला एकमात्र कृषि उत्पाद है। खाद्य उत्पादों में "बीकानेरी भुजिया" को यह टैग मिला है। कोलायत के गोविंदसर गांव में खेजड़ी उत्पादों पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक पंजीकृत किसान समिति की स्थापना की गई। यादव ने कहा विश्वविद्यालय ने इस समिति की ओर से जीआई टैग के लिए आवेदन किया।

सफलता मिलते ही जिम्मेदारी

सांगरी को जीआई टैग दिलाने में सफलता हासिल करने के बाद सरकार ने यादव को नई जिम्मेदारी दे दी। आनुवांशिक एवं पादप प्रजनन विभाग एसकेआरएयू बीकानेर के हैड डॉ.सुजीत यादव और कृषि महाविद्यालय नागौर के कृषि अर्थशास्त्री डॉ.विकास पावड़िया को राज्य स्तर पर सलाहकार नियुक्त किया है। ये दोनों राजस्थान के उत्पादों को जीआई टैग दिलाने में मदद करेंगे। कृषि आयुक्त चिन्मयी गोपाल ने इन दोनों के सलाहकार बनाने के आदेश 24 अप्रैल को किए थे।